B-III
L- 11
MIH

वाणिज्यिकरण का आर्थिक प्रभाव

कृषि पर प्रभाव :-

- वाणिज्यिकरण के कारण कृषि के क्षेत्र में वाणिज्यिक फसलों विशेषकर नकदी फसलों का उत्पादन बढ़ा चाय, काफी जैसे बगानी फसलों की भी शुरूआत हुई। पूँजीवादी मानसिकता में भी वृद्धि हुई।
- लेकिन इन परिवर्तनों का आधार कृषि का आधुनिकीकरण नहीं था उत्पादन में वृद्धि के लिए उन्नत बीज, उन्नत खाद आधुनिक तकनीक अनुसंधान इत्यादि का उपयोग नहीं किया गया बल्कि किसानों को एक प्रकार से वाणिज्यिक कृषि के लिए विवश किया गया।
- क्योंकि वाणिज्यिक कृषि लागत अधिक होती थी अतः किसानों को प्रायः महाजनों से कर्ज लेने पड़ते थे। और यदि फसल बेहतर होती थी तो उसका लाभ प्राथमिक उत्पादकों को नहीं मिलता था।
- वाणिज्यिकरण के साथ उद्योगों से संबंधित कच्चे मालों का निर्यात बढ़ा इससे भारत में कच्चे मालों की कीमतें भी बढ़ी और

उद्योगों की लागत भी बढ़ी।

- वाणिज्यिकरण के कारण व्यापार की प्रकृति मे भी परिवर्तन देखा, भारत जोकि तैयार मालों के निर्यात के तौर पर जाना जाता था अब कच्चे मालों के निर्यात के रूप में जाना जाने लगा।

परिवहन :-

- वाणिज्यिकरण के साथ भारत में परिवहन के आधुनिक साधनों का भी विकास प्रारम्भ हुआ जैसे - रेलवे, पक्की सड़के इत्यादि हालांकि इसके निर्माण में ब्रिटिश जरूरतों का अधिक महत्व दिया गया।

बाजार :-

- यह सत्य है कि वाणिज्यिक फसलों को राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों को देखते हुए या बाजारों को देखते हुए कुछ सीमा तक उत्पादन किया गया। हांलाकि इसका लाभ भी प्राथमिक उत्पादकों को नही मिलता था बल्कि ब्रिटिश एवं भारतीय व्यापरियो को मिलता था

- कुल मिलाकर वाणिज्यिकरण की प्रक्रिया को देखे तो यह कोई स्वाभाविक प्रक्रिया नही थी बल्कि थोपी गई प्रक्रिया थी जिसका उद्देश्य भारतीय अर्थव्यवस्था को ब्रिटिश

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

अर्थव्यवस्था के अधीन रखना था।

नोट :-

साम्राज्यवाद -

किसी राष्ट्र के द्वारा किसी दूसरे राष्ट्र के विरूद्ध आक्रामक व्यवहार जैसे- धमकी देना, कुछ भू-भाग पर दावा करना या नियंत्रण स्थापित करना, साम्राज्य विस्तार के उद्देश्य से सम्पूर्ण राष्ट्र पर नियंत्रण स्थापित करना, शोषण के उद्देश्य से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष नियंत्रण स्थापित करना।

उपनिवेशवाद :-

साम्राज्यवाद का ही एक रूप है जब कोई शक्तिशाली देश किसी दूसरे देश पर शोषण के उद्देश्य से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष नियंत्रण स्थापित करता है।
जैसे- ब्रिटेन ने भारत पर नियंत्रण स्थापित किया।

प्र०- ब्रिटिश काल में कृषि के वाणिज्यीकरण ने भारतीय अर्थव्यवस्था का उपनिवेशीकरण किया टिप्पणी करें।

प्र०- कृषि के वाणिज्यीकरण से आप क्या समझते हैं ब्रिटिश काल में वाणिज्यीकरण के आर्थिक प्रभावों को संक्षेप में बताएं?

टिप्पणी :- टिप्पणी से संबंधित प्रश्नों में अपने विचारों को रखना है आप प्रश्न के साथ भी चल सकते हैं प्रश्न के समर्थन और उसके विरुद्ध भी अपने विचारों को रख सकते हैं।

कृषि के पिछड़ेपन के कारण

- २०वीं सदी के प्रथम चार दशक में कृषि उत्पादन में चौदह प्रतिशत गिरावट के साक्ष्य मिलते हैं इसके लिए विभिन्न कारक उत्तरदायी हैं

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES

सरकार के द्वारा - कृषि में निवेश की उपेक्षा, हालांकि भू राजस्व के रूप में उपज का एक बड़ा भाग सरकार अधिग्रहित कर लेती लेती थी।

- भू-राजस्व वसूली की कठोर शर्तें तथा प्राकृतिक आपदा में भी किसानों को सामान्यतः राहत नहीं देना।
- जमींदारों एवं महाजनों के द्वारा भी कृषि में निवेश न करना।
- कृषि पर जनसंख्या का बढ़ता दबाव और भूमि छोटे-छोटे भागों में विभाजित होना।

- किसानों के पास इतनी बचत नहीं होती थी कि वे कृषि में निवेश करे और न ही इतना साहस होता था कि यदि जोखिम लेकर निवेश करते भी हैं तो उपज पर उनका नियंत्रण होगा या नहीं।
- आधुनिकीकरण की उपेक्षा जैसे- उन्नत बीज खाद, तकनीक, सिंचाई, अनुसंधान आदि की उपेक्षा।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

उद्योग

- 18वीं सदी में उद्योग
- उद्योगों के पतन का कारण
- विऔद्योगीकरण

18वीं सदी में भारतीय उद्योग :-

शहरी उद्योग

कपड़ा (सूती, रेशम), हथियार, आभूषण
नौ परिवहन, लकड़ी बर्तन, चमड़े
विलासिता संबंधी उद्योग
शिल्प, कागज इत्यादि।

उत्पादन - कारीगर के द्वारा - मशीनों से नहीं

खरीददार - शासक वर्ग, शहरी जनता, देशी विदेशी

ग्रामीण उद्योग

कपड़ा, बर्तन, लकड़ी चमड़े के कार्य
कारीगर के द्वारा उत्पादन
खरीददार - स्थानीय लोग।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

उद्योगों के पतन के कारण

- कम्पनी का राजनीतिक शक्ति के रूप में उदय एवं विस्तार के कारण प्रारम्भ में मुख्यतः शहरों में विलासिता एवं हथियारों से संबंधित उद्योगों को अत्यधिक नुकसान हुआ क्योंकि भारतीय राज्य इन उद्योगों के सबसे अधिक खरीददार थे।
- कारीगरों पर अत्याचार भी भारतीय उद्योगों विशेषकर कपड़ा उद्योग का पतन एक कारण बना राजनीतिक शक्ति का दुरुपयोग करते हुए कम्पनी के कर्मचारी, व्यापारी कम कीमत पर कारीगरों से कपड़ो को खरीदते थे या कम मजदूरी पर काम करने के लिए विवश करते थे।
लेकिन इससे बड़ी संख्या में कारीगरों ने या तो कार्य को छोड़ या फिर किसी दूसरे स्थान पर चले गए।

Note :-

भारतीय उद्योगों को सर्वाधिक नुकसान ब्रिटिश औद्योगिक क्रान्ति के कारण हुआ। औद्योगिक क्रान्ति के कारण भारत को बाजार एवं कच्चे माल के स्त्रोत के रूप में स्थापित करने के लिए आर्थिक नीतियों में

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

परिवर्तन किया गया और 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध में भारतीय उद्योगों को सर्वाधिक नुकसान हुआ।

- 1813 ई में एक तरफ कम्पनी का एकाधिकार समाप्त किया गया दूसरी तरफ ब्रिटिश उद्योगपतियों के दबाव में भारत में मुक्त व्यापार की नीति लागू की गई।
 (सीमा शुल्क के बिना या कम सीमा शुल्क पर ब्रिटिश वस्तुओं का भारतीय बाजार में प्रवेश)

- ब्रिटिश वस्तुएं मशीनों से निर्मित थी इनकी गुणवत्ता भी अच्छी थी और कीमते भी कम थी। भारतीय उद्योग ब्रिटिश उत्पादों से प्रतिस्पर्धा में पिछड़ने लगी।

- एक तरफ ब्रिटिश वस्तुओं को भारत में सीमा शुल्क के बिना अनुमति दी गई वहीं दूसरी तरफ भारतीय वस्तुओं पर ब्रिटेन में सीमा शुल्क लगाए गए।
- दूसरे शब्दों में भारतीय वस्तुओं को ब्रिटिश बाजारों से वंचित होना पड़ा।

- राजनीतिक प्रभाव का दुरूपयोग करते हुए कम्पनी ने भारतीय उत्पादों को हतोत्साहित करने के लिए अन्तर्देशीय सीमा शुल्क

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

को भी हथियार बनाया।

• प्राथमिकता के आधार पर भारतीय सरकार ने ब्रिटिश बाजार से सरकारी उपयोग में आने वाली वस्तुओं की उपयोग की जैसे- हथियार, कागज, सैनिकों के अन्य सामान इत्यादि। इससे भी भारतीय उद्योगों को नुकसान हुआ।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR